I.G.N.O.U. *Based*

NEERAJ®

E.C.O.-1

व्यावसायिक संगठन

(Business Organisation)

By: *Rakesh Kumar*

Question Bank** Cum **Chapterwise Reference Book

***Including* Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 160/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only	Typesetting by: *Competent Computers*	Printed at: *Novelty Printer*

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

*If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website **www.neerajignoubooks.com**. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
*To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website **www.neerajignoubooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

व्यावसायिक संगठन
(Business Organisation)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1-2

S.No.	*Chapterwise Reference Book*	*Page*

1.	व्यावसायिक संगठन की मूलभूत संकल्पनाएँ तथा रूप	1
2.	व्यावसायिक संगठन के रूप-I	8
3.	व्यावसायिक संगठन के रूप-II	23
4.	व्यवसाय का प्रवर्तन	26
5.	व्यवसाय की वित्त व्यवस्था	31
6.	दीर्घकालीन वित्त के स्रोत एवं अभिगोपन	38
7.	स्टॉक एक्सचेंज	42

S.No.	Chapter	Page
8.	विपणन का माध्यम : विज्ञापन	47
9.	विज्ञापन के माध्यम	52
10.	आंतरिक (देशीय) व्यापार तथा वितरण के माध्यम	56
11.	थोक व्यापारी और फुटकर व्यापारी	60
12.	आयात और निर्यात व्यापार की कार्यविधि	67
13.	व्यावसायिक सेवाएँ : बैंकिंग	73
14.	व्यावसायिक जोखिम और बीमा	80
15.	परिवहन तथा भंडारण	86
16.	सरकार और व्यवसाय	94
17.	सार्वजनिक उद्यमों में संगठन के रूप	97
18.	लोकोपयोगी सेवा-संस्थाएं	102

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

व्यावसायिक संगठन

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

(अधिकतम भारिता : 70%)

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-क

प्रश्न 1. निम्नलिखित में अंतर बताइए–

(a) स्वामित्व पूंजी तथा ऋण पूंजी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-34, प्रश्न 3

इसे भी देखें–ऋण पूँजी वित्त में, एक ऋण एक या अधिक व्यक्तियों, संगठनों, और/या अन्य संस्थाओं, अन्य व्यक्तियों, संगठनों आदि द्वारा धन की उधार है। प्राप्तकर्ता (यानी उधारकर्ता) ऋण लेता है, और आमतौर पर उस पर ब्याज का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होता है, और उधार ली गई मूल राशि चुकाने के लिए भी।

ऋण को प्रमाणित करने वाला दस्तावेज, उदाहरण के लिए एक प्रोमिसरी नोट, सामान्य रूप से अन्य चीजों के साथ, उधार ली गई मूल राशि, ऋणदाता की ब्याज दर चार्ज करने और पुनर्भुगतान की तारीख निर्दिष्ट करता है। ऋण में ऋणदाता और उधारकर्ता के बीच, समय अवधि के लिए विषय संपत्तिओं के पुनर्वितरण की आवश्यकता होती है।

ब्याज, ऋणदाता के ऋण देने के लिए एक प्रोत्साहन प्रदान करता है। एक कानूनी ऋण में, इन दायित्वों और प्रतिबंधों में से प्रत्येक अनुबंध द्वारा लागू किया जाता है, जो उधारकर्ता को अतिरिक्त अनुबंधों के तहत भी ऋण अनुबंध के रूप में जाना जाता है। यद्यपि यह आलेख मौद्रिक ऋण पर केंद्रित है, प्रैक्टिस में किसी भी भौतिक वस्तु को दे दिया जा सकता है।

ऋण प्रदाता के रूप में कार्य करना बैंकों और क्रेडिट कार्ड कंपनियों जैसे वित्तीय संस्थानों की मुख्य गतिविधियों में से एक है। अन्य संस्थानों के लिए, बॉन्ड जैसे ऋण अनुबंध जारी करना वित्त पोषण का एक सामान्य स्रोत है।

(b) व्यवसाय तथा वाणिज्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, प्रश्न 1, पृष्ठ-4, प्रश्न 4

प्रश्न 2. 'व्यवसाय' की संकल्पना की व्याख्या कीजिए। व्यवसाय के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, प्रश्न 1

प्रश्न 3. व्यावसायिक संगठन के सहकारी रूप से क्या तात्पर्य है? संगठन के सहकारी रूप की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-19, प्रश्न 10

खण्ड-क

प्रश्न 4. व्यावसायिक जोखिमों के विभिन्न प्रकार (types) क्या हैं? जोखिम प्रबंधन में निहित विभिन्न कदमों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-81, प्रश्न 2, तथा प्रश्न 1

प्रश्न 5. लोकोपयोगी सेवा संस्था (Publlic utility) से क्या तात्पर्य है? इसकी मुख्य विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-102, प्रश्न 1

प्रश्न 6. वितरण के माध्यम के चयन को प्रभावित करने वाले कारकों की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-57, प्रश्न 2

प्रश्न 7. अल्पकालीन पूंजी प्राप्त करने की विभिन्न पद्धतियों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–अल्पकालीन पूंजी प्राप्त करने की विधियां– कंपनियां विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं से क्रेडिट पर कच्चे माल, घटक, स्टोर और स्पेयर पार्ट्स खरीदती हैं। आमतौर पर आपूर्तिकर्ता 3 से 6 महीने की अवधि के लिए क्रेडिट देते हैं, और इस तरह कंपनी को अल्पकालिक वित्त प्रदान करते हैं। इस प्रकार की वित्त की उपलब्धता व्यवसाय की मात्रा के साथ जुड़ी हुई है। जब माल का उत्पादन और बिक्री बढ़ जाती है, तो खरीद की

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

मात्रा में स्वचालित वृद्धि होती है, और अधिक व्यापार ऋण उपलब्ध होता है।

फैक्टरिंग–फैक्टरिंग एक वित्तीय लेनदेन तथा ऋणी वित्त का एक प्रकार होता है। पारंपरिक फैक्टरिंग एक व्यापारिक वित्त पोषण विकल्प है। जिसमें कंपनियां अंकित मूल्य से छूट पर अपने खाते को प्राप्त करने के द्वारा नकदी जमा करती हैं। यह एक विशिष्ट क्रेडिट ऑपरेशन है, जिसमें तीन पक्ष शामिल हैं, एक बैंक या एक कंपनी का कारक, एक उत्पाद बेचने वाली कंपनी और एक उत्पाद खरीदने वाली कंपनी प्रत्येक पक्ष अन्य प्रतिभागियों की मदद से अपने लक्ष्यों को साकार करता है। वित्तीय और क्रेडिट संस्थानों की प्रस्तुत सेवा छोटे और मध्यम व्यवसायों के प्रतिनिधियों के बीच बहुत लोकप्रिय है। कुछ उद्योगों में, फैक्टरिंग ऑपरेशन एक अस्थागित भुगतान के साथ उत्पादों को ने बचने के सबसे इष्टतम विकल्प है, जब विक्रेता अपने उत्पाद के लिए पैसे का इंतजार नहीं कर सकता है, और खरीदार के पास इसके लिए भुगतान करने के लिए पर्याप्त कार्यशील पूँजी नहीं है।

एक्सचेंज के डिस्काउंटिंग बिल–इस पद्धति का व्यापक रूप से कंपनियों द्वारा अल्पकालिक वित्त जुटाने के लिए उपयोग किया जाता है। जब सामान क्रेडिट पर बेचे जाते हैं, तो माल के खरीदारों द्वारा स्वीकृति के लिए विनिमय के बिल आम तौर पर तैयार किए जाते हैं। परिपक्वता की तारीख तक बिलों को रखने के बजाय, बैंक छूट के रूप में जाने वाले चार्ज के भुगतान पर कंपनियां वाणिज्यिक बैंकों के साथ छूट दे सकती हैं। बैंकों द्वारा प्रभारित की जाने वाली छूट की दर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा समय-समय पर निर्धारित की जाती है। छूट की राशि में छूट के समय बिलों के मूल्य से कटौती की जाती है। इस विधि द्वारा वित्त जुटाने की लागत बैंक द्वारा वसूल की जाने वाली छूट है।

बैंक ओवरड्राफ्ट और कैश क्रेडिट–यह अल्पकालिक वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कंपनियों द्वारा अपनाया जाने वाला एक सामान्य तरीका है। कैश क्रेडिट एक ऐसी व्यवस्था को संदर्भित करता है जिसके तहत वाणिज्यिक बैंक एक निर्दिष्ट सीमा के भीतर समय-समय पर अग्रिम के रूप में धन खींचने की अनुमति देता है। यह सुविधा स्टॉक में माल की सुरक्षा, या प्रोमिसरी नोट्स के लिए दी गई है, जो एक दूसरे हस्ताक्षर, या सरकारी बॉन्ड जैसे अन्य विपणन योग्य उपकरणों को प्रभावित करती है। ओवरड्राफ्ट बैंक के साथ एक अस्थायी व्यवस्था है जो कंपनी को एक निश्चित सीमा तक बैंक के साथ अपने वर्तमान जमा खाते से ओवरड्राफ्ट करने की अनुमति देता है। ओवरड्राफ्ट सुविधा भी प्रतिभूतियों के खिलाफ दी गई है। नकद जमा और ओवरड्राफ्ट पर लगाए गए ब्याज की दर बैंक जमा पर ब्याज की दर से बहुत अधिक होती है।

प्रश्न 8. बैंक तथा इसके ग्राहक के बीच के संबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-76, प्रश्न 4

■■

Neeraj Publications
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

व्यावसायिक संगठन
(BUSINESS ORGANISATION)

1 व्यावसायिक संगठन की मूलभूत संकल्पनाएँ तथा रूप
(Basic Concepts and Forms of Business Organisation)

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

व्यवसाय के स्वरूप तथा क्षेत्र
(Nature and Scope of Business)

मानवीय क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं–*(i)* गैर-आर्थिक, तथा *(ii)* आर्थिक। गैर-आर्थिक क्रियाएँ वे हैं, जिनका धन कमाने से कोई सम्बन्ध नहीं होता। आर्थिक क्रियाएँ अनिवार्यतः धनोपार्जन के उद्देश्य से की जाती हैं।

आर्थिक क्रियाओं को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–

1. व्यवसाय (Business)–व्यवसाय वह आर्थिक क्रिया है जिसके द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण किया जाता है। व्यवसाय का उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि करके लाभ कमाना है।

2. पेशा (Profession)–पेशा वह आर्थिक क्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति विशिष्ट ज्ञान और प्रशिक्षण द्वारा लोगों की व्यक्तिगत सेवा करके धन कमाता है।

3. नौकरी अथवा सेवा (Employment or Service)–नौकरी के अन्तर्गत वे कार्य आते हैं, जिनमें एक व्यक्ति किसी नियोक्ता के अधीन कार्य करता है। इस कार्य के बदले में उसे वेतन प्राप्त होता है।

व्यवसाय के तत्त्व, लक्षण या विशेषताएँ–1. साहस, 2. जोखिम का तत्त्व, 3. वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण, 4. लेन-देनों या सौदों में नियमितता, 5. लाभ-उद्देश्य, 6. सेवा-भावना, 7. व्यवसाय एक सामाजिक क्रिया है, 8. व्यवसाय एक तंत्र है।

व्यवसाय का क्षेत्र एवं अंग (Scope and Elements of Business)–व्यवसाय का क्षेत्र काफी विस्तृत है। व्यावसायिक क्रियाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–उद्योग एवं वाणिज्य। उद्योग का सम्बन्ध वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन से है जबकि उनके वितरण का नाम वाणिज्य है।

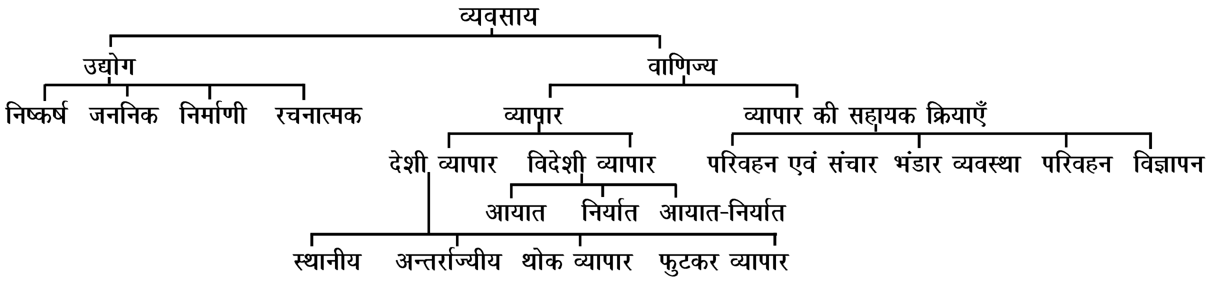

www.neerajbooks.com

व्यवसाय के उद्देश्य–I आर्थिक उद्देश्य, II सामाजिक उद्देश्य, III मानवीय उद्देश्य।

उद्यमकर्ता–उद्यमकर्ता (साहसी) वह व्यक्ति है, जिसने किसी व्यवसाय को प्रारम्भ करने की कल्पना की है, संगठन को मूर्तरूप प्रदान किया है तथा व्यवसाय को चला रहा है और जोखिम उठाता है।

प्रश्न 1. व्यवसाय किसे कहते हैं? इसके लक्षणों तथा उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–व्यवसाय का अर्थ (Meaning of Business) : व्यवसाय एक मानवीय क्रिया है। मानवीय क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं : *(i)* गैर-आर्थिक (Non-economic), तथा *(ii)* आर्थिक (Economic)।

गैर-आर्थिक क्रियाएँ वे मानवीय क्रियाएँ हैं, जिनका धन कमाने से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ऐसी क्रियाएँ प्रायः कर्त्तव्यपरायणता या सुख या प्रेम के उद्देश्य से की जाती हैं, जैसे–ईश्वर-वन्दना, धर्म-प्रचार, समाज-सेवा अथवा परिवार-सेवा आदि। गैर-आर्थिक क्रियाएँ व्यवसाय के क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आती हैं। **आर्थिक क्रियाएँ** अनिवार्यतः धनोपार्जन के उद्देश्य से की जाती हैं, जिससे व्यक्ति अपना जीवन-यापन कर सके। **व्यवसाय भी एक आर्थिक क्रिया है।** व्यवसाय एक व्यापक शब्द है और इसमें वे सब क्रियाएँ शामिल की जाती हैं, जिनका उद्देश्य वस्तुओं और सेवाओं के निरन्तर एवं नियमित उत्पादन, विक्रय, हस्तांतरण या विनिमय द्वारा उचित लाभ कमाना है।

व्यवसाय शब्द को विभिन्न विद्वानों द्वारा विविध प्रकार से परिभाषित किया गया है। व्यवसाय की विभिन्न परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

एल॰एच॰ हैने (L.H. Haney) के अनुसार, *"व्यवसाय से आशय उस मानवीय क्रिया से है, जो वस्तुओं के क्रय-विक्रय द्वारा धन उत्पादन अथवा धन प्राप्ति के लिए की जाती है।'*

मैक नॉटन के शब्दों में, *"व्यवसाय शब्द से तात्पर्य पारस्परिक हित के लिए वस्तुओं, मुद्रा या सेवाओं के विनिमय से है।"*

थॉमस के शब्दों में, *"व्यवसाय एक ऐसा कार्य है, जिसकी मुख्य जोखिम मौद्रिक हानि (Monetary Loss) और जिसका मुख्य उद्देश्य मौद्रिक लाभ (Monetary Gain) है।"*

व्यवसाय के तत्त्व, लक्षण या विशेषताएँ
(Elements or Characteristics of Business)

1. साहस (Entrepreneurship)–युद्ध, विज्ञान और व्यवसाय–ये तीनों ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ साहसी व्यक्ति ही सफल होते हैं। व्यवसाय एक साहसिक कार्य है। व्यवसायी आशावादी होता है, वह निराशा के वातावरण में भी अपने साहस तथा परिश्रम के द्वारा आशा का संचार करता है।

2. जोखिम का तत्त्व (Element of Risk)–व्यवसाय में सदैव कुछ-न-कुछ जोखिम का तत्त्व विद्यमान रहता है। तनिक-सी भी असावधानी से व्यवसाय विनाश के गर्त में जा सकता है। इसके बावजूद भी व्यवसायी भावी सफलता की आशा में व्यवसाय को स्थापित करता है। यही कारण है कि व्यवसाय में 'बिना जोखिम लाभ नहीं' (No risk, no gain) वाली कहावत अक्षरशः सत्य सिद्ध होती है।

3. वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण (Production and Distribution of Goods and Services)–जिन मानवीय क्रियाओं द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण होता है, उन्हें व्यवसाय के अन्तर्गत सम्मिलित किया जा सकता है। व्यवसाय में वस्तुओं एवं सेवाओं का विक्रय एवं वितरण होता है।

4. लेन-देनों या सौदों में नियमितता (Regularity in Dealings)–व्यवसाय के अन्तर्गत हम ऐसे लेन-देनों या सौदों को सम्मिलित करते हैं जो कि नियमितता के आधार पर किए जाते हैं। यदाकदा किए जाने वाले सौदों को व्यवसाय के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं किया जाता।

5. लाभ उद्देश्य (Profit Motive)–प्रत्येक व्यावसायिक क्रिया का उद्देश्य लाभ कमाना होता है। बिना लाभ की इच्छा से की जाने वाली क्रियाएँ व्यवसाय नहीं कहलातीं।

6. सेवा-भावना (Service Motive)–व्यवसाय में लाभ के साथ-साथ सेवा-भावना भी होती है। दोनों पक्षों (क्रेता एवं विक्रेता) को परस्पर लाभ एवं सन्तुष्टि व्यवसाय का मूल तत्त्व है।

7. लाभ की अनिश्चितता (Uncertainty of Profit)–यद्यपि व्यवसाय की स्थापना लाभ कमाने के उद्देश्य से की जाती है, परन्तु लाभ और लाभ की मात्रा अनेक घटकों पर निर्भर करती है। ये घटक (Factors) आन्तरिक (Internal) या बाह्य (External) दोनों ही हो सकते हैं। आन्तरिक घटक व्यवसाय तथा व्यवसायी से सम्बन्धित होते हैं। बाह्य घटकों से तात्पर्य ऐसी बातों से है, जो व्यावसायिक वातावरण, जैसे–सरकारी नीतियाँ राजनीतिक व अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं से सम्बन्धित होती हैं।

8. व्यवसाय एक सामाजिक क्रिया है (Business is a Social Activity)–व्यवसाय एक सामाजिक क्रिया है, जो समाज में रहकर समाज के लिए की जाती है।

प्रश्न 2. क्या व्यवसाय वृत्ति (पेशा) और रोजगार से भिन्न होता है? विवेचन कीजिए।

उत्तर–व्यवसाय की वृत्ति (पेशा) तथा रोजगार से भिन्नता

(Business, Profession and Employment Distinguished)

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अन्तर का आधार	व्यवसाय (Business)	पेशा (Profession)	रोजगार (Employment)
1. प्रारम्भ करने की विधि	प्रवर्तक के निर्णय, रजिस्ट्रेशन तथा कानून द्वारा निर्धारित औपचारिकताओं का पालन करके व्यवसाय की स्थापना की जा सकती है।	पेशेवर संस्था के सदस्य बनकर या प्रैक्टिस करने का प्रमाणपत्र प्राप्त करने का पेशा प्रारम्भ किया जा सकता है।	सेवा के अनुबन्ध या नियुक्ति पत्र द्वारा रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।
2. कार्य की प्रकृति	समाज के लिए वस्तुओं व सेवाओं का निर्माण करना।	विशिष्ट एवं विशेष प्रकृति की सेवाएँ प्रदान करना।	नियोक्ता द्वारा प्रदत्त कार्य सम्पन्न करना।
3. योग्यता	किसी न्यूनतम योग्यता की आवश्यकता नहीं होती।	शिक्षण एवं विशिष्ट प्रशिक्षण आवश्यक है।	सभी दशाओं में विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती।
4. आधारभूत उद्देश्य	समाज की आवश्यकताओं को पूरा करके लाभ कमाना।	विशिष्ट सेवा प्रदान करके धन कमाना।	नियोक्ता की सेवा करना, मजदूरी या वेतन प्राप्त करना।
5. पूँजी	व्यवसाय के आकार के अनुसार पूंजी का विनियोग किया जाता है।	स्थापना के लिए सीमित पूँजी की आवश्यकता होती है।	पूँजी के विनियोजन की कोई आवश्यकता नहीं होती।
6. पुरस्कार	व्यवसाय का पुरस्कार है लाभ।	पेशे का पुरस्कार है शुल्क या फीस।	सेवा का पुरस्कार है मजदूरी या वेतन।
7. जोखिम	लाभ अनिश्चित व अनियमित होता है।	शुल्क या फीस निश्चित होती है।	बिना जोखिम के नियमित मजदूरी या वेतन मिलता है।
8. हित का हस्तांतरण	कुछ औपचारिकताओं के साथ हित का हस्तांतरण सम्भव है।	सम्भव नहीं होता।	हित हस्तांतरणीय नहीं होता।
9. आचार-संहिता	कोई विशिष्ट आचार संहिता नहीं होती, यद्यपि व्यावसायिक शील व नैतिकता का परिपालन होता है।	आचार-संहिता होती है।	नियोक्ता की शर्तें व अनुशासन ही आचार-संहिता है।

प्रश्न 3. उद्योग (Industry) किसे कहते हैं? उसके वर्गीकरण की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर–उद्योग (Industry)–उद्योग का अर्थ उन समस्त क्रियाओं से है जिनके द्वारा कच्चे माल को निर्मित माल का रूप दिया जाता है। वस्तुओं के उत्पादन से अभिप्राय उनकी उपयोगिता में वृद्धि करना होता है। उद्योग द्वारा उत्पादक या उपभोक्ता वस्तुएँ निर्मित की जाती हैं। संक्षेप में, रूप-परिवर्तन द्वारा वस्तुओं में उपयोगिता का सृजन करना उद्योग कहलाता है।

उद्योग के प्रकार–प्रकृति के अनुसार उद्योगों को निम्नलिखित चार भागों में बांटा जा सकता है–

1. जननिक उद्योग (Genetic Industries)–जब भूमि या प्रकृति से उत्पादन किया जाता है तो उन्हें जननिक उद्योग कहते हैं, जैसे–कृषि, पशुपालन, मछली उद्योग, वन उद्योग आदि। इन्हें प्रारम्भिक उद्योग (Primary Industries) भी कहते हैं।

2. निष्कर्षण उद्योग (Extractive Industries)–इसके अन्तर्गत वे उद्योग आते हैं, जिनका सम्बन्ध भूगर्भ या समुद्रतल से विभिन्न पदार्थों को निकालने से होता है। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से भूगर्भ से विभिन्न खनिज पदार्थों, जैसे–कोयला, लोहा, ताँबा निकालने से तथा समुद्रतल से मछली पकड़ने, तेल निकालने से सम्बन्धित उद्योग आते हैं।

3. निर्माणी उद्योग (Manufacturing Industries) – साधारणतः उद्योग से हमारा अभिप्राय निर्माणी उद्योग से ही होता है। इसके अन्तर्गत कच्चे माल या अर्द्धनिर्मित माल के उपयोग से विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया जाता है, जिनका उपभोग हम अपने जीवन में करते हैं। ये उद्योग रूप उपयोगिता का सृजन करते हैं। इनके प्रमुख उदाहरण हैं–वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, कागज उद्योग, लोहा एवं इस्पात उद्योग आदि।

4. रचनात्मक उद्योग (Constructive Industries)–ये उद्योग इमारत, पुल, बाँध, सड़क, नहर इत्यादि के बनाने से सम्बधित होते हैं। इन उद्योगों में निर्माणी उद्योग के उत्पादों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–लोहा, इस्पात, सीमेन्ट इत्यादि। इस उद्योग की मुख्य विशेषता यह है कि इसके उत्पादों को बाजार में ले जाकर बेचा नहीं जाता है, बल्कि इनका एक निश्चित स्थान पर निर्माण किया जाता है।

www.neerajbooks.com

प्रश्न 4. वाणिज्य से आप क्या समझते हैं? उपयुक्त उदाहरण देकर वाणिज्य के वर्गीकरण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर–वाणिज्य (Commerce)–**जेम्स स्टीफेन्सन** (James Stephenson) के शब्दों में, *"वाणिज्य के अन्तर्गत वे सब क्रियाएँ आती हैं, जो उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं के बीच की दीवार को तोड़ने में सहायता देती हैं। यह सब उन प्रविधियों का कुल योग है, जो कि वस्तुओं के विनिमय (बैंकिंग) में व्यक्तियों (व्यापार), स्थान (परिवहन एवं बीमा) तथा समय (भण्डार-गृहों) की बाधाओं को दूर करने में संलग्न होती हैं।"*

(Commerce embraces all those processes, which help to break the barriers between producers and consumers. It is the sum total of those processes which are engaged in the removal of hindrances of persons (Trade); Place (Transport and Insurance) and Time (Warehousing) in the exchange (Banking) of commodities.)

वाणिज्य एक व्यापक शब्द है। इसके अन्तर्गत उन सभी क्रियाओं का समावेश है, जो वस्तुओं और सेवाओं को उत्पत्ति स्थान से उपभोग के स्थान पर पहुँचाने के लिए आवश्यक हैं। वाणिज्य का कार्य मूलतः वितरण (Distribution) है। वाणिज्य यह कार्य (*i*) व्यापार (Trade) तथा (*ii*) व्यापार में सहायक सेवाओं जैसे परिवहन, बीमा, बैंक, संदेशवाहन के साधन, विज्ञापन व प्रचार की सहायता से करता है।

वाणिज्य उत्पादक एवं उपभोक्ता दोनों को एक-दूसरे से जोड़ता है।

वाणिज्य का क्षेत्र (Scope of Commerce)–वाणिज्य का क्षेत्र काफी विस्तृत है। इसमें शामिल क्रियाओं को हम दो भागों में बांट सकते हैं–(*i*) व्यापार, (*ii*) व्यापार की सहायक क्रियाएँ।

(*i*) व्यापार (Trade)–व्यापार से अभिप्राय उन क्रियाओं से है, जो लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं के क्रय-विक्रय में संलग्न होती हैं अर्थात् व्यापार से अभिप्राय क्रेता और विक्रेता दोनों के पारस्परिक लाभ हेतु वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय से है। जो व्यक्ति इन क्रियाओं को करते हैं, उन्हें व्यापारी (Traders) और उनकी क्रियाओं को व्यापार (Trade) कहते हैं।

व्यापार के प्रकार–व्यापार मुख्यतः दो प्रकार का होता है–(1) देशी व्यापार, तथा (2) विदेशी व्यापार।

(1) देशी व्यापार (Home Trade)–देशी या आन्तरिक व्यापार से आशय उस व्यापार से है, जो एक ही देश के विभिन्न स्थानों अथवा क्षेत्रों में किया जाता है अर्थात् यदि देश की सीमाओं के भीतर व्यापार किया जाए, तो उसे देशी व्यापार कहते हैं। देशी व्यापार को **(क) थोक व्यापार** (Wholesale Trade) तथा **(ख) फुटकर व्यापार** (Retail Trade) के रूप में भी वर्गीकृत किया जा सकता है।

(2) विदेशी व्यापार (Foreign Trade)–विदेशी व्यापार से हमारा आशय उस व्यापार से है जो विभिन्न देशों अथवा सरकारों के बीच होता है। विदेशी व्यापार को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :

(*a*) आयात व्यापार (Import Trade), *(b)* निर्यात व्यपार (Export Trade), *(c)* पुनः निर्यात व्यापार (Re-export Trade)

(*a*) आयात व्यापार (Import Trade)–इसमें विदेशी माल का क्रय किया जाता है।

(*b*) निर्यात व्यापार (Export Trade)–इसमें घरेलू माल को विदेशी क्रेताओं को बेचा जाता है।

(*c*) पुनः निर्यात व्यापार (Entreport or Re-export Trade)–इसमें विदेशी माल को आयात करके पुनः निर्यात किया जाता है तथा लाभ कमाया जाता है।

(*ii*) व्यापार की सहायक क्रियाएँ (Aids to Trade)–व्यापार के सफल एवं सुचारु संचालन में अनेक सहायक लेकिन महत्त्वपूर्ण क्रियाओं की आवश्यकता पड़ती है। ये क्रियाएँ व्यापारिक बाधाओं को दूर करती हैं। इन क्रियाओं का संक्षेप में वर्णन नीचे किया गया है :

1. परिवहन (Transportation)–परिवहन के माध्यम से माल उत्पादक से थोक व्यापारी, खुदरा व्यापारी और अन्त में ग्राहक के पास पहुँचाया जाता है–यातायात वाणिज्य का पहिया है। परिवहन साधनों की सहायता से स्थान उपयोगिता बढ़ती है।

2. संदेशवाहन (Communication)–संदेशवाहन अथवा संचार व्यवस्था आधुनिक व्यापार का महत्त्वपूर्ण अंग है। राज्यीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को संदेशवाहन ही सम्भव बनाता है। संदेशवाहन में टेलीफोन, तार, टैलेक्स, डाक-सेवाएँ आदि सम्मिलित की जाती हैं।

3. बैंकिंग (Banking)–आधुनिक युग में बैंक भी व्यापारियों की बहुत सहायता करते हैं। बैंक व्यापारियों का पैसा सुरक्षित रखते हैं, आवश्यकता के समय उन्हें ऋण देते हैं और कई प्रकार की महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ देकर व्यापार में सहायता करते हैं।

4. बीमा (Insurance)–व्यवसाय में पग-पग पर अनिश्चितताएँ रहती हैं, जैसे–गोदाम में आग लग जाना, जहाज डूब जाना, दैवी प्रकोप से सम्पत्ति का नष्ट होना, कर्मचारियों की लापरवाही एवं बेईमानी से क्षति होना इत्यादि। इन विभिन्न प्रकार की जोखिमों पर विजय पाने हेतु विभिन्न प्रकार के बीमे कराए जा सकते हैं, जैसे–अग्नि बीमा, समुद्री बीमा, दुर्घटना बीमा इत्यादि।

बीमा एक ऐसा अनुबन्ध है, जिसके अन्तर्गत बीमा करने वाली कम्पनी एक निर्धारित प्रीमियम लेकर बीमा कराने वाले

Neeraj Publications www.neerajbooks.com